OFFICE OF THE PRINCIPAL :: DARRANG COLLEGE :: TEZPUR

Ref: DC/Gen/F.No.254/16/2024/86 Date:- 05-02-2024

NOTICE
College Week
Poem Recitation Competition

This is for information of all the students that the following poems have been selected for the poem recitation competition of College Week 2023-24.

For any queries please contact Sandhya Devi, Literature Secretary, DCSU M.No.- 9394797302

Principal,
Darrang College, Tezpur
Principal
Darrang College
Tezpur, Assam

Copy to the:

1) V.P. for information.
2) All the Notice Boards.
3) College Website.
4) File.

Principal
Principal
Darrang College
Tezpur, Assam

বীৰেন্দ্ৰ কুমাৰ ভট্টাচাৰ্য।।

বিষ্ণু ৰাভা, এতিয়া কিমান ৰাতি-

বিষ্ণু ৰাভা এতিয়া কিমান ৰাতি?
তুমি সাৰে আছা সাৰে আছো আমি
আৰু সাৰে আছে প্ৰীতি।

বিহৰ তলিত চিফুং বাহীৰ কৰুণ সুৰ,
বড়ো গাভৰুৰনাচোনৰতাল ভাগে-
জনতাৰ চকু,চকুৰপানীৰে পুৰ,
মাজনিশা কোনে ৰাজ আলিয়েদি আক্ষেপ কৰি যায় ,
বিষ্ণু ৰাভা নাই!!

নিজান চেলত, তুমিসাৰে আছা,
সাৰে আছে ক্ৰড় ইটাৰ দেৱাল,
বন্দি তোমাৰ কণ্ঠৰ সুৰ,নাচোনৰ লয়লাস।।
তুমি সাৰে আছা, সাৰে আছে আৰুজাগ্ৰত জনতা, নিদ্ৰাবিহীন ৰাতি
বিষ্ণু ৰাভা, এতিয়া কিমান ৰাতি???

বিহ পথাৰত, ৰৈ আছো আমি, ৰৈ আছে এয়া মনোৰমা সখি,
ৰাজপথ জুৰি নৱ উন্মেষ ধ্বনি,হেজাৰ জনৰ অবিৰাম কুৰুলি, সকলোৰে মুখ প্ৰশ্নমুখৰ আজি ই
বিহৰ ৰাতি--

কাৰাগাৰৰ দ্বাৰ কেতিয়া মুকলি হব? বন্দী সৃষ্টিয়ে
কেতিয়ানো প্ৰাণ পাব?প্ৰাণহীন আজি গীত মাত সুৰ, প্ৰাণহীন বিহতলি।।

বন্দী শিল্পীৰ বেদনাত জাগে,
ৰঙা জীৱনৰ উন্মাদনা, সচা আবেগৰ ৰোল,মাজ নিশা কোনে মৰিশালী জুৰিচিঞৰি উঠে
কল্লোল বন্দু!! জীৱনৰ কল্লোল!!

Where The Mind Is Without Fear

-Rabindranath Tagore

Where the mind is without fear
and the head is held high
Where knowledge is free
Where the world has not
been broken up into fragments
By narrow domestic walls
Where words come out from
the depth of truth
Where tireless striving
stretches its arms towards perfection
Where the clear stream of reason
has not lost its way
Into the dreary desert sand of dead habit
Where the mind is led forward by thee
Into ever-widening thought and action
Into that heaven of freedom, my Father,
let my country awake.

स्वतंत्रता

रामनरेश त्रिपाठी

एक घड़ी की भी परवशता कोटि नरक के सम है।

पलभर की भी स्वतंत्रता सौ स्वर्गों से उत्तम है।

जब तक जग में मान तुम्हारा तब तक जीवन धारो।

जब तक जीवन है शरीर में तब तक धर्म न हारो॥

जब तक धर्म तभी तक सुख है, सुख में कर्म न भूलो।

कर्म-भूमि में न्याय-मार्ग पर छाया बनकर फूलो।

जहाँ स्वतंत्र विचार न बदलें मन से आकर मुख में।

बने न बाधक शक्तिमान जन जहाँ निबल के सुख में॥

निज उन्नति का जहाँ सभी जन को समान अवसर हो।

शांतिदायिनी निशा और आनंद-भरा वासर हो।

उसी सुखी स्वाधीन देश में मित्रो! जीवन धारो।

अपने चारु चरित से जग में प्राप्त करो फल चारो॥

সুরঞ্জনা — জীবনানন্দ দাশ

সুরঞ্জনা, আজো তুমি আমাদের পৃথিবীতে আছো;
পৃথিবীর বয়সিনী তুমি এক মেয়ের মতন;
কালো চোখ মেলে ওই নীলিমা দেখেছো;
গ্রীক হিন্দু ফিনিশীয় নিয়মের রূঢ় আয়োজন
শুনেছো ফেনিল শব্দে তিলোত্তমা-নগরীর গায়ে
কী চেয়েছে? কী পেয়েছে? —গিয়েছে হারায়ে।

বয়স বেড়েছে ঢের নরনারীদের
ঈষৎ নিভেছে সূর্য নক্ষত্রের আলো;
তবুও সমুদ্র নীল; ঝিনুকের গায়ে আলপনা;
একটি পাখির গান কী রকম ভালো।
মানুষ কাউকে চায়— তার সেই নিহত উজ্জ্বল
ঈশ্বরের পরিবর্তে অন্য কোনো সাধনার ফল।

মনে পড়ে কবে এক তারাভরা রাতের বাতাসে
ধর্মাশোকের ছেলে মহেন্দ্রের সাথে
উতরোল বড়ো সাগরের পথে অন্তিম আকাঙ্ক্ষা নিয়ে প্রাণে
তবুও কাউকে আমি পারিনি বোঝাতে
সেই ইচ্ছা সংঘ নয়, শক্তি নয়, কর্মীদের সুধীদের বিবর্ণতা নয়,
আরো আলো : মানুষের তরে এক মানুষীর গভীর হৃদয়।

যেন সব অন্ধকার সমুদ্রের ক্লান্ত নাবিকেরা
মক্ষিকার গুঞ্জনের মতো এক বিহ্বল বাতাসে
ভূমধ্যসাগরলীন দূর এক সভ্যতার থেকে

আজকের নব সভ্যতায় ফিরে আসে;
তুমি সেই অপরূপ সিন্ধু রাত্রি মৃতদের রোল
দেহ নিয়ে ভালোবেসে, তবু আজ ভোরের কল্লোল।

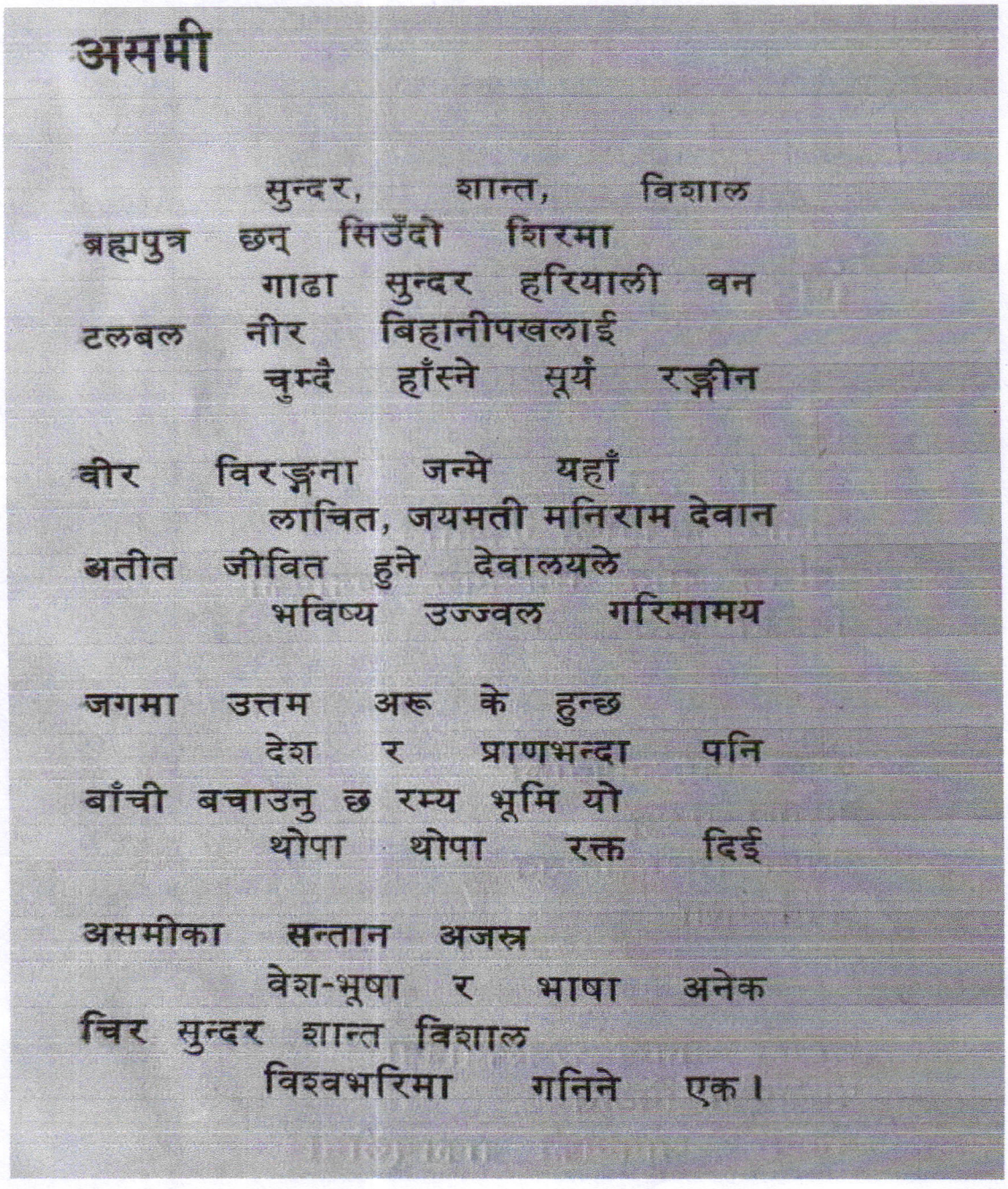

असमी

सुन्दर, शान्त, विशाल
ब्रह्मपुत्र छन् सिउँदो शिरमा
गाढा सुन्दर हरियाली वन
टलबल नीर बिहानीपखलाई
चुम्दै हाँस्ने सूर्य रङ्गीन

वीर विरङ्गना जन्मे यहाँ
लाचित, जयमती मनिराम देवान
अतीत जीवित हुने देवालयले
भविष्य उज्ज्वल गरिमामय

जगमा उत्तम अरू के हुन्छ
देश र प्राणभन्दा पनि
बाँची बचाउनु छ रम्य भूमि यो
थोपा थोपा रक्त दिई

असमीका सन्तान अजस्र
वेश-भूषा र भाषा अनेक
चिर सुन्दर शान्त विशाल
विश्वभरिमा गनिने एक।

कविताको नाम – असमी

कवि – प्रा. दुर्गा घिमिरे उपाध्याय

****

बादारि

ईसान मोसाहारी

मोनाबिलि जाबोबाय
साना दोबैबाय,
''दाजावसै नोंनि नावआ''
हनै बुंबाय।

''हाबाब बे बबे गामि
फैबाय आं आनि थानि ?''
सोडसै आं मिनि मिनि
ओरै जेबोला
आबुं दै खावना,
जानजियाव दैहु लाना
मोखां सोमखे जाना
थांबाय सिख्लाया।

दोमैलु खोमसि खोमसि
साना दोबैबाय,
हाबाब मा मोजां गामि
थागौ सानबाय।

श्रीमद्भगवद्गीता

अध्याय १

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः |

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥१॥

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।

आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ।।२॥

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।

व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ।।३॥

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि

युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथ :।।४।।

धृष्टकेतुश्चेकितान| काशिराजश्च वीर्यवान् :

पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गव :|| ५||

युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान् |

सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथा :|| ६||

****